अंतरा-शब्दशक्ति

परिंदे ख़यालों के

काव्य संग्रह

हेमन्त बोर्डिया

परिंदे ख़यालों के

(काव्य संग्रह)

हेमंत बोर्डिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-08-6

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चैक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- हेमंत बोर्डिया
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Parinde khayalon ke by Hemant Bordiya

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मेरी कलम से

ज़िन्दगी के सफ़र में हासिल कुछ अनुभवों को गीत, ग़ज़ल और नज़्मों में ढालने का हुनर आप जैसे पाठकों की नवाज़िशों से परवान चढ़ रहा है। ऑफीस के लिये रोज़ाना 80 कि.मी. का सफ़र यूँ तो आम व्यक्ति के लिए बड़ा हैरान करने वाला होता लेकिन मेरे लिये यही सफ़र खास बन गया है। पिछले तीन वर्षों से कलम और एहसासों की जुगलबंदी ने मुझे एक छोटे से कलमकार का रूप दिया है। मेरी रचनाओं में से 80 प्रतिशत रचनाएँ इसी सफ़र में पृष्ठांकित हुई है।

हिन्दुस्तान की इस माटी में रची बसी हिंदी और उर्दू भाषाओं का मिला जुला असर मेरी रचनाओं में आ ही जाता है। माता-पिता से मिले संस्कारों ने साम, दाम, दण्ड-भेद से परे जीवन के कई पहलुओं को एक अलग ढंग से देखने का नज़रिया दिया है।

अक्सर दैनिक जीवन की छोटी छोटी घटनाएं देख कर ख़याली परिंदे निकल पड़ते हैं गीत, ग़ज़लों और नज़्मों के आसमान में चुन लाते हैं कुछ लफ्ज़ जो कागज़ पर सज कर बन जाते हैं कभी गीत, ग़ज़ल तो कभी नज़्म या नई कविता। नज़्म और नई कविताओं की मेरी यह किताब अपने माता-पिता को समर्पित कर रहा हूँ।

उम्मीद है मेरे ख़याली परिंदे आपके दिल के आसमान से भी होकर गुजरेंगे।

हेमन्त बोर्डिया

अनुक्रमणिका

1.	परिंदे ख़यालों के	7
2.	अंकुर	8
3.	एहसासों के बीज	10
4.	गृह प्रवेश	11
5.	रिश्ते	12
6.	पुरानी स्कूल	13
7.	सुनो वधु	14
8.	चित्र	15
9.	श्वेत रंग	16
10.	बेड़ियाँ	17
11.	सुनो चित्रकार	18
12.	बिवाइयां	19
13.	मंदिर और मदिरालय	20
14.	बेटियाँ	21
15.	मौन	22
16.	प्रकृति तुम्हीं प्रेमिका	23
17.	सुनो राधिके..!	24
18.	श्रृंगार	25

19. श्री हनुमान 26
20. वॉलपेपर 27
21. लिफ़ाफ़ा 28
22. पिता की तरह 29
23. हिंदी माँ 30
24. स्वतन्त्र चिरैया 31
25. आख़री पन्ने 32

परिंदे ख़यालों के

न जाने किन-किन
बातों पर दिल
हो जाता है...संज़ीदा..!
जाने कब सोचते-सोचते
कोई पुरानी टिस
हो जाती है ज़िंदा.. !

कुर्सी पर बैठ
कर एक कमरे से
झांक कर देखता हूँ
दरीचे के पार..
नीला, गहरा आसमान..!
और दिल के घोसलें से
निकल पड़ते हैं ख़याल..
गोया उड़ते हुए परिंदे हो ..!

ख़याल का परिंदा..लेता है परवाज़
लगाता है गोते
अतीत के आसमान में..
दबा लाता है अपनी चोंच में
कुछ भूली बिसरी बातें..कुछ
यादें..!
डाल जाता है मेरे सामने
यादों की कुछ ख़ुराक...
करने लगता हूँ मैं... यादों की
जुगाली
और जब थक जाते हैं..
जबड़े दिमाग के..तब
थूक कर खड़ा हो जाता हूँ
अचानक..हड़बड़ी में..
मौज़ूदा वक़्त की बर्बादी पर
होकर शर्मिंदा...!!
झटक लेता हूँ अपने कपड़े,
और साथ में ज़ेहन भी..
ख़यालों के परिंदों को
हक़ीक़त के कफ़स के सुपुर्द कर..
बंद कर देता हूँ
अपने कमरे की खिड़कियाँ..!!

अंकुर

मैं प्रतीक तुम्हारे बन्धनों का
मैं तुम दोनों के मध्य
नेह का चरमोत्कर्ष...!!
मैं हूँ अंश तुम्हारा...
मेरे अंकुरण का हो कारण तुम...!
मुझमें विलय है ...
तुम्हारे गुण धर्म,
तुम्हारे डी.एन.ए. से हूँ मैं संरचित....!!
मेरी प्रकृति तुमसे है ..
तुमसे ही तो है मेरे
भविष्य का प्रादुर्भाव...!!

थामे रखना यूँ ही अपने हाथ
एक दूसरे के हाथों में..
तुम्हारे प्यार की गर्माहट से
मिलती है मुझे ऊर्जा,
आत्मबल और आत्मविश्वास..!
जब कभी छूटते हैं तुम्हारे हाथ
या उधड़ते हैं तुम दोनों के
मध्य के बंधन...किसी विवाद
किसी कलह के फलस्वरूप..
टूटता हूँ मैं ..उधड़ते हैं मेरे गुण सूत्र...
दरकता है मेरा आत्मबल..!!

तुम दोनों के बीच भड़की
चिंगारी भी महसूस होती है मुझे...
और तुम दोनों के मध्य नेह की खुशबू भी ..!

मैं आया नहीं हूँ स्वयं ..
मुझे लाया गया है ..
मैं नहीं हूँ सिर्फ़ देन कुदरत की...
मेरे अस्तित्व के उत्तरदायी हो तुम दोनों...!
इसलिये थामे रहना
एक दूसरे को यूं ही
स्नेह से..प्यार से..!
इसी में झलकती है
मेरी परवाह..प्यारे मम्मी पापा...!!

क्यूँ कि जब टूटता है कोई रिश्ता...
माता पिता के मध्य....तो देख
पाती है दुनिया..
जोड़ दिये जाते है ये रिश्ते
कहीं, किसी और उपयुक्त जगह..
लेकिन उस वक़्त मैं टूटता हूँ भीतर से ..
कब देख पाता है कोई..
बिखरे रह जाता है बहुत कुछ..
ताउम्र भीतर ही भीतर..!!
बिखरे हुए गुणसूत्र..
बार बार गिराते हैं मुझे...अपनी ही नज़र में...!!

एहसासों के बीज

जब वक़्त की धूप तेज हो
मौसम साफ़ हो..
सड़कों पर हलचल हो..
बाज़ार में उछाल हो..
मैं रहता हूँ तैयार हमेशा..
क्यूँ कि बैठता है
मेरे समय का ऊँट
अक्सर उस करवट जहाँ
से शुरू होता है मेरा
नया इम्तिहान..!
मैं रखता हूँ अपने
इन खेतों की मिट्टी में
चलाकर हल..!
छोड़ देता हूँ बनाकर क्यारियाँ...!!
मैं जानता हूँ गमों के अब्र
एक दिन बरसेंगे..
और मैं बो दूँगा.. अपने
एहसासों के बीज..!
धीरे धीरे उग कर
निकल पड़ेंगीं..
नयी ग़ज़लें, गीत और कविताएँ...
इस दर्द की ज़मीन से...!!

गृह प्रवेश

तुमने जब किया था प्रवेश..
उस नए घर में..
कुमकुम के थाल से उतरकर
सुर्ख़ लाल पैरों के चिन्ह
छोड़ते हुए ...तब
उतने ही सुर्ख़ थे
सारे नये रिश्ते...
ऊर्जा, स्नेह,
नये रिश्तों की
आकांक्षाओं से ओत-प्रोत...!!

तुम्हारे बढ़ते हुये
कदमों के साथ..
हल्के होते गये
पैरों के सुर्ख़ लाल चिन्ह..
समय के साथ
नये रिश्तों के रंग भी
होने लगे हल्के..!

जैसे घोल में किसी पदार्थ के
मिलाने पर नया पदार्थ
होती हैं एक प्रतिक्रिया..रिएक्शन..
वैसे ही रिश्तों के इस
नये घोल में भी हुई प्रतिक्रियाएँ..
आया परिवार की
प्रकृति में भी बदलाव...
सुर्ख़ रंग हल्का हो गया..
कुछ वक्त के लिये
बदरंग भी हुआ..अंततः..
समय के साथ रिश्तों का
विलयन संतृप्त हुआ...
पदार्थों ने समझी
एक दूसरे की प्रकृति ...
देखो..आज फिर से सुर्ख़ हैं
रिश्तों के रंग..
उसी सुर्ख़ लाल रंग की तरह
जब तुमने किया था प्रवेश..
उस नए घर में..
कुमकुम के थाल से उतरकर
सुर्ख़ लाल पैरों के चिन्ह छोड़ते हुए
..!!

रिश्ते

ये दरकते भी हैं
जब तेज़ हो हवा हालातों की..!
परत दर परत खुलते जाते है ..
गोया आँधी के साथ साथ ..
किसी चट्टान पर जमी
धूल उड़ती जाती है ..
और धीरे धीरे नुमायाँ
होने लगता है पथरीलापन...!
ये तपने भी लगते है ..
वक़्त की पड़ती तेज धूप में..इतने कि
छूना भी इन्हें गवारा न करे कोई..!
और जब खुशगवार
होता है समय..होती है ..
एकदूसरे की परवाह की,
प्यार की बारिश..
ये सोखने लगते हैं ..नमी..
वापस ढक जाता है इनका पथरीलापन..!
सतह सज जाती है...नर्म, हरी-हरी दुबों से..
और तब ये बड़े दिलकश लगते हैं..!
ये वक़्त के साथ साथ..
दरकते हैं..तपते हैं..भीगते हैं..और सजते भी हैं ..
रिश्ते ..
बदलते रहते हैं अपना रूप...!!

पुरानी स्कूल

अरसे बाद गुज़रना हुआ
तुम्हारे सामने से...!
यूँ तो अक्सर देखा है
तेज रफ़्तार से गुज़रते हुए
बड़ी तेजी से सड़क किनारे के
नज़ारे
पीछे चले जाते हैं
और हम बहुत आगे..
लेकिन आज तुम्हे देखा तो
लगा सब कुछ वहीं ठहर गया..!
इस नये रंग से पुती हुई
तुम्हारी दीवारों के पीछे की
सीलन..
नये समय के नये पौधों के बीच
खड़े कुछ पुराने पेड़..
तुम्हारे गेट के बाहर बने हुए
कैफे से झाँकता ..
बबन समोसे वाले की
सायकल पर टँगा हुआ
काँच का डिब्बा और
उससे आती गर्म समोसे की
खुशबू...!
नई यूनिफार्म में
खेल के क़ायदों में रहकर खेलते
हुए
कुछ बच्चों में नुमाया होते
बेकायदा..बेतहाशा..मस्ती करने
वाले
कुछ बचपन के यार,
मोटरसाइकलों की पार्किंग से,
घण्टियाँ बजाती डंडे वाली
सायकलें ..!
मेरी स्कूल...!!
तुम्हारे सामने से गुजरते ही
मेरे ज़ेहन से चिपक कर..
ये सारे नज़ारे बड़ी दूर तक
मेरे साथ आ गए हैं..
मगर फ़क़त एहसास..!
सच ही तो है.. तेज रफ़्तार से
गुज़रती बस हो
या ज़िन्दगी..
बड़ी तेजी से पीछे छोड़ जाती हैं..
नज़ारे...!!

सुनो वधु

सुनो वधु ..!!
तुम हो गणित के अंक के समान..!
तुम्हारे अंक का मान तय किया है
..
तुम्हारी परवरिश ,
परिवेश और संस्कारों ने..!
तुम रख तो रही हो
ससुराल की देहरी पर
पहला कदम...
लेकिन अपने आगे
धनात्मक चिन्ह लेकर
प्रवेश करना...!
तुम्हारा सिर्फ घर और
परिवार ही नहीं बदलेगा ,
बदलेगा समूचा समीकरण...!
ये प्रवेश है तुम्हारा
पुराने समीकरण से निकलकर
नये समीकरण में...
जहां न जाने कौनसा अंक
हो बड़ा या बहुत छोटा ...
घटाव, गुणा या भाग
का चिन्ह लिये.....!!
तुम गुणा का चिन्ह लेकर
आयी और नये समीकरण में
कोई शून्य का अंक मिला
तो तुम भी तो हो जाओगी शून्य..
या कोई मिला घटाव के
चिन्ह के साथ
तुम भी तो हो जाओगी
ऋणात्मक ..!!
ऋण का चिन्ह लेकर आई
तो दोगी परिणाम
हमेशा कम या ऋणात्मक...!

इसलिये प्रवेश करो ,
सकारात्मक विचारों का
धनात्मक चिन्ह लिये..
ताकि तुम दे सको
नए समीकरण में कुछ
सकारात्मक,
धनात्मक परिणाम...!
कम से कम तुम पर
तो नहीं लगेगा आक्षेप
नये समीकरण के
शून्य या ऋणात्मक प्रतिफलों
का..!!
स्त्री तुम्हारा स्वागत है
नये समीकरण में ...!!

चित्र

चित्र भी कितने विचित्र होते हैं ..
किसी की कहानी,
किसी की याद..
किसी के मित्र होते हैं..
चित्र कितने विचित्र होते हैं..!!

चित्र किसी के
पूर्ण एहसास..
किसी के अपूर्ण सपने..
चित्र किसी की
भावनाओं का प्रदर्शन..
किसी का अबोला अधूरापन..
किसी का जीया हुआसमय..
किसी की कोरी कल्पना..!
चित्र बीते हुए
पल,व्यक्ति,घटना..
को आंखों में सँजोये
रखने का माध्यम..
चित्र नहीं है मात्र कोई वस्तु..
चित्र में होता है जीवन..!
चित्र अपने आप में
चल-चित्र होते हैं..
चित्र भी कितने विचित्र होते हैं ..!!

श्वेत रंग

कभी..

इस पर लगा हुआ..
हल्का सा दाग
खींच लेता है ध्यान ..हर किसी का..
बन जाता है
सबकी आँखों का केंद्र बिंदु...!
किसी का ईर्ष्या भाव
करता है कोशिश
हर पल.. इसे छूने की
अपने मैले हाथों से...!
कोई कर लेता है साधना...
देख कर एक टक..
करता है यात्रा मौन की...
परम् शांति की ..!
कोई चित्रकार ललचा जाता है..
होता है आतुर
बिखेरने को इस पर बेशुमार रंग..!
कोई देखता है
इसमें विरक्ति, खालीपन..
कोई मानता है कि
हैं शामिल इसमें सारे ही रंग....!

कितना कठिन होता है ..श्वेत, सफेद होना..
कितना कठिन होता है..श्वेत, शुभ्र बने रहना..!!

बेड़ियाँ

कई बार यूँ महसूस होता है
पैरों में बंधी हुई हो गोया
कोई बड़ी सी चट्टान..
चलना चाहूँ तो चल नहीं पाता..
कभी कभी तो खड़े होना भी
लगता है गैर मुनासिब..!
हालात की ज्यादतियाँ हों..
या हो रिश्तों के बीच की गलतफहमियां..
बंध कर चट्टान की तरह..
जकड़ लेती है मेरे पैरों को..
मुश्किल हो जाता है आगे बढ़ना..
लेकिन चलते रहना ज़रूरी है..
इसी पुरज़ोर कोशिश में मैं
जीत जाता हूँ...चट्टान सरकती है..
रास्ते की रगड़ से
टूट टूट कर होती जाती है ..हल्की..
और कभी मैं खुद चलता हूँ इसे संभाल कर..
यह सोच कर कि कभी वक़्त की बाढ़ में..
हम दोनों बन सकेंगें एक दूसरे का..सहारा..!!
हालात की ज्यादतियों की हों..
या..रिश्तों की गलतफ़हमियों की
ये चट्टानें अब मेरी आदतों में शुमार है
और अब तो मेरी ताकत भी यही हैं ..!!

सुनो चित्रकार

मैं हूँ तुम्हारा पसन्दीदा विषय..!
कभी उठाया तुमने ब्रश
शुरुआत की मेरी मृगनयनी आँखों से..!
कभी मेरी माथे की लटें,
बिखरी हुई ज़ुल्फ़ें ... तुम्हें भा गयी ..
और तुमने उंकेर दी श्वेत कागज़ पर...!

कभी अपनी कल्पना के अनुरूप
तुमने पहले खींची ...
दो लकीरें और बना दिये मेरे होंठ..!
कभी आधार पर अपनी
पसंद और प्राथमिकता के
तुमने चित्र को प्रारम्भ किया
मेरी सुडौल नाक से..!
कभी वशीभूत होकर वासना के
तुमने आकार दिया
सबसे पहले मेरे शरीर को..!

काश.. !!
कि तुम उकेर पाते सबसे पहले ..
या बाद में ही सही
मेरा अंतर्मन..मेरी भावनाएं..मेरे अनकही पीड़ाएँ ..
तो मानती मैं तुम्हें.. एक कुशल चित्रकार।।!!

बिवाइयां

पढ़ लेता है इन्हें..
कोई भी आम इंसान..!
ये कर देती है
ज़ाहिर...दास्तान
गुज़रे दौर के
पथरीले रास्तों पर
कदमों के संघर्ष की..!
ये बता देती है ..
किस कदर की गयी है मेहनत..
पहन कर पैरों में
महज़ ज़िम्मेदारियों के जूते...!
रास्ते की तपन, रगड़,
कील, कीचड़, कंकर छोड़ते जाते हैं
इनके पैरों के
संघर्ष के प्रमाण पत्र
पर ज़ख्मों के हस्ताक्षर...!
ये लकीरें हैं जो
किस्मत नहीं कर्म दिखाती है...
हर कोई जान सकता है
बड़ी आसानी से,
इन फ़टी हुई ऐड़ियों, बिवाइयों
और लकीरों का ज्योतिष ...!!

मंदिर और मदिरालय

शाम होते ही
बढ़ जाती है भीड़..!
अजीब सी चहल पहल
भीतर जाने की जल्दी में..
लोगों का हुजूम...!
बाहर रेहड़ी वाले..
सजाये हुए अपनी दुकानें..
बांधते हुए ग्राहकों का सामान
बड़ी ही फुर्ती से ...!
जितने लोग यहाँ, उतनी ही वजहें..!
कोई आया है लेने सुकून..
कोई आया है भुलाने अपनी चिंताएं...!
किसी को चाहिये ..मेहनत से
टूटते बदन का आराम..
किसी को टूटे हुए मन की मरम्मत..!
कोई लुटा देता है इस दर पर
अपना सब कुछ..
किसी को लूट लेता है कोई
दिखाकर रास्ता मुक्ति का...!!

मंदिर हों या मदिरालय
शाम होते ही..
बढ़ जाती है यहाँ लोगों की भीड़ ..!!

बेटियाँ

वो छोड़ जाती हैं
अपनी दुआयें..
अपने मन की चिंतित आँखें..
वार जाती है अपनी सारी नेमतें..!
नियुक्त कर जाती है ..
देख रेख के लिये अपने इष्ट को,
देकर अपने उपवासों का वास्ता..!
छोड़ जाती है पीछे
बरकतों की धानी..!
कर जाती है समर्पित
अपनी आधी जिंदगी के
जप, तप, श्रम, कर्म के सारे सुफल..!
छोड़ जाती है अपनी
एक ज़िन्दगी..
बेटियां जब विदा होती है...
अपने घर से ...
बेटियां कुछ नहीं ले जाती..!!

बेटियां जीती हैं एक जन्म में ..
एक ही किरदार में
दो-दो ज़िंदगियाँ ...
बेटियों के होते हैं दो मन..!!

मौन

हाँ..
मैं लड़ता हूँ तुमसे कभी कभी
या तुम कहो तो अक्सर ...
हाँ ,
मैं नहीं मानता अपनी
गलती कभी कभी या
तुम कहो तो अक्सर..
बना देता हूँ ताड़ ,
तील सी छोटी बात का ..
या हो जाता हूँ पल भर के लिये
एक अंगारा...
या तुम कहो तो ज्वाला..!!
हाँ मैं नहीं कह पाता होंठों से
उतनी मीठी बात,
जितनी मैं लिख सकता हूँ
सजा सकता हूँ कागज पर..
एक अनकहा स्नेह या
तुम कहो तो सिर्फ़ दिखावा...!!

बहस करते करते अचानक
हो जाना मौन कभी मेरा
कभी तुम्हारा...
और वह आख़िरी बोल
हो जाते हैं
लाइन ऑफ कंट्रोल की तरह..!!
क्योंकि जानते हैं हम दोनों
प्यार के रिश्ते को
बांधने वाली डोर की मर्यादा..
इस मौन में ही
निहित है जीत ..
यह मौन ही है प्राकट्य
रिश्ते के अटूट होने का...!!
क्योंकि मौन
मोड़ लाता है हमे,
कलह और नफ़रत की राह से..
मौन ही बढ़ाता है कदम वापस
स्नेह की ओर..!!

प्रकृति तुम्हीं प्रेमिका

जब खुश होता हूँ..
तो नाच लेता हूँ, तुम्हे
अपनी बाहों में लेकर..
जब होता हूँ दुःखी
या चिंतित..
बैठ जाता हूँ तुम्हारी
नदी के किनारे..!
तुम दे देती हो मुझे ..
चिंता का उपचार..
या अपने मोहपाश से
कर देती हो मुझे
विचार शून्य..!!

तुम ही मेरे शरीर को
शीतल बयार से
सहलाती हो..!
तुम खुशबू बनकर
समाती हो मेरी श्वास में..!
प्रकृति तुम सिखाती हो
मुझे....बुरे वक़्त में
संयम रखना और रखना
अच्छे समय की आशा..!
तुम बताती हो..हर पतझड़
का मतलब होता है..
निकट भविष्य में
बहारों का पुनरागमन ..!

तुम ही सिखाती हो..
कभी तूफान, बाढ़ या भूकंप का
सबक पढ़ाकर कि-
अति सर्वत्र वर्जयते..!
तुम देती हो सन्देश अपने
परम होने का..!
अपने क्षण भर के क्रोध से
जता देती हो तुम..
की तुम नहीं तो मैं भी नहीं..!

प्रकृति तुम ही तो हो,
मेरी सच्ची प्रेमिका...!!
सदैव आदमी से
वफ़ा करती हुई स्त्री की तरह..
और मैं अक्सर
आदमी सा बेवफ़ा..!!

सुनो राधिके..!

सुनो राधिके..
नहीं जँचती तुम्हारे चेहरे पर
ये विरह की वेदना..
तुम अर्धभाग हो
सृष्टि का..
बोझ बहुत है तुम्हारे आसुंओं की
वृष्टि का..!

तुमसे जानी जायेगी ,
युगों तक प्रेम की
परिभाषा, पराकाष्ठा..!
तुम नायिका हो
प्रेमशास्त्र की ..
तुम ही हो इसकी विषय वस्तु..
तुमसे है प्रतिमान..
प्रेम के वृहद अर्थो के..
प्रेम में समर्पण के..!
तुमसे ही जाना जाएगा युगों तक
की प्रेम नहीं है कोई
सांसारिक भाव ...
प्रेम अलौकिक है..
प्रेम हैं भौतिकता से परे..

प्रेम है विशुद्ध भाव..
प्रेम नहीं है कोई रिश्ता संसार
का..
प्रेम के इस भाव में ..
बसते हैं कृष्ण.. स्वयं भगवान..!!

जो अपूर्ण है ..वही प्रेम है ..
प्रेम की शुद्धता है ..विरह में ..
प्रेम ने ले लिया यदि सांसारिक,
भौतिक स्वरूप ..तो
अंत हो जायेगा प्रेम के
निःस्वार्थ भाव का..
जन्म ले लेंगें भाव
अपेक्षा और अधिकार के..
इसलिये राधा..!!
रहने दो इस प्रेम को अपूर्ण...

विरह ..प्रेम का आंनद है..
नहीं जँचती तुम्हारे चेहरे पर
विरह वेदना..
तुम अर्ध भाग हो
सृष्टि का..राधिके !!

श्रृंगार

मेरा ऊपरी श्रृंगार
प्रमाण है तुम्हारे अस्तित्व का...
मेरे श्रृंगार से जुड़ा है
तुम्हारा होना
तुम्हारा ना होना..!

मैं एक नोटिस बोर्ड हूँ ..
तुम्हारी बेहतरी का..
गोया तुम्हारी धड़कनो की
ई.सी.जी. रिपोर्ट हूँ मैं ..!
और मेरा अस्तित्व...
किसी बंधे हुए सागर की
तरह, मेरे अंदर हिलोरें मार रहा
है..
जिसकी एक भी लहर
नहीं आने देती मैं दुनिया के
सामने..
हाँ ..कभी कभी
पूनम की रात में उठने वाले
ज्वार की तरह...
आँखों से छलक जरूर जाती हैं..
इस सागर की कुछ बूँदें ..!!
मेरे अंदर है मेरी दुनिया..
दबी हुई ..किस्मत में लिखे
कर्तव्यों के बोझ से...
सोचती हूँ ..कभी कभी..
तुमसे मेरा श्रृंगार ज़िंदा है..
या मेरे श्रृंगार से है हिफाज़त
तुम्हारे जीवन की..!!

मैं भी अपनी सरहदों पर
लड़ती हूँ दिन रात
एक लड़ाई..
रखना होता है मुझे भी
चौकसी..ताकि
कोई न कर पाये पार
मेरी सरहदों को..!

मेरे अंतर्मन के युद्धों को,
उनमें होने वाली मेरी जीत को
कोई नहीं देख पाता..
कोई मेडल या पदक
नहीं होता मेरे लिये..
कौन जानता है ..??
एक सैनिक की पत्नी के
द्वारा विजय किये गये
अंतर्मन के युद्धों को...!!

श्री हनुमान

तुमने प्राप्त किया है शीर्षस्थ पद,
आस्था के संसार का..!
युगों युगों से तुम
करते आ रहे हो प्रतिनिधित्व...
हमारी आस्था का..
तुम हो एक सेतु
ईश और भक्त के मध्य ..!
तुम हो..सर्व बलशाली..
सर्व हितकारी..
तुम्ही हो आपदा हारी..!
तुम हो ईश्वर प्रदत्त
स्वयं ईश्वर रूप ..
तुम सीखाते हो
सर्व संपन्न, सर्वशक्तिमान,
चैतन्य होकर भी..
ईश्वर के प्रति समर्पित होना..
तुम हो नायक,मुखिया
हम भक्तों के..श्री हनुमान..!!
तुम चाहो तो बदल सकते हो
सृष्टि का रुख..
लेकिन तुम निभा रहे हो
अपने प्रभु श्रीराम की मर्यादा..
जो ईश्वर होकर भी
एक पिता एक राजा की
आज्ञा का करते हुए पालन ,
चले गए वनवास..
जो दे गए.. सृष्टि और जीवन को
उनके अपने नियमों से चलने
देने का संदेश..!
तुम भी तो चैतन्य हो कर भी
हो मर्यादित ..श्री हनुमान..
शायद कर रहे हो ,
अपने स्वामी श्रीराम का
अनुसरण..!
अन्यथा हम सभी के
आराध्य प्रभु श्रीराम
अपनी ही जन्मभूमि पर
तम्बू में नहीं होते ..!!
हमें विश्वास है ..
पुनः वनवासों के बाद..
राम पुनः विराजेंगे ,
अपने राम दरबार के
सिहांसन पर..!!
नियमों.. संविधानों..
और मर्यादाओं के अनुरूप..!!
फिर भी बहुत चोटिल है ,
हम सभी का अंतस..
हमसे कई ज्यादा
तुम्हारा भी तो
होगा.....हनुमान...!!

वॉलपेपर

मत बांधों मुझे ..
किसी अनिष्ट,
अनभिलाषित
घटना के भय के बंधन से...!
मत बांधों मुझे तुम्हारे
अपने स्वाभिमान,
अपनी आन के
अस्तित्व की मूरत बना कर..!
न बनाओ मुझे वॉलपेपर
तुम्हारी घरेलू
मानवीय सम्पदा का ...!
नाम पर प्यार
और संरक्षण के..!!

मैं उड़ना चाहती हूँ..
खुले असीमित
आकाश में..
सीख लुंगी नन्हें परिंदों
की तरह मैं भी,
बचना,संभलना,लड़ना..!

मैं चाहती हूँ ..
एक खूबसूरत उड़ान..!
इस बात की परवाह
किये बगैर की
कोई ज़मीन से देख रहा है
या नहीं ...क्यूँ की
मैं उड़ रही हूँ स्वयं के लिये ...!
मैं नहीं नापती
अपनी ऊंचाई को ...
नहीं करती मैं
प्रतियोगिता किसी से..
इस उड़ान में मिलने वाला
आनन्द ही है मेरी उपलब्धि ..!
यही मंज़िल है ..
यही है उत्सव ..
मेरी जीत का...!!

लिफ़ाफ़ा

सुनो !!
ये जो गुलाबी रंग का लिफ़ाफ़ा है
न
यह हो शायद मेरे लिये,
उसे अच्छी तरह पता है मेरा
पसंदीदा रंग..डाकिये बाबू..!!
और नहीं तो यह मोटा सा
लिफ़ाफ़ा
होगा मेरे ही लिये..
न जाने कितनी बातें जो हम
कर नहीं पाये महीनों से..
शायद सब लिख दी होगी उन्होंने..
और नहीं तो जरा देखो ठीक से
और एक बार ...
उस झोले में भी ..
तुम्हारी नज़र भी तो कमज़ोर
हो गयी है ..डाकिया बाबू..
कहीं यह नज़र की कमज़ोरी..
मेरी जान न ले ले..
ले न जाओ कहीं मेरी चिट्ठी
बगैर मुझे सौपें ...
और फिर आओ जाने कब..
धड़कने पहले ही संभल से
बाहर हुई जा रही है . .!!
उफ़्फ़.. हे भगवान..ये सफेद
लिफ़ाफ़ा..
उस पर ये लाल रंग के छीटें ....
कहीं यह सरहद से तो नहीं आया
है ..
ये कैसा असमंजस है..
चिट्ठी से तुम्हारा हाल जानने की
खुशी भी है...और डर भी..!!
किसी अनहोनी की ख़बर से
इंतज़ार का दर्द मीठा है ...
दिल बैठ गया है...रहने दो
अब मत ढूंढो कोई ख़त..
कुछ वर्ष तो कट जायेंगे
इस इंतज़ार में,
बस आते ज़रूर रहना..!!

तुम्हारी कमज़ोर नज़र भी
कभी कभी अच्छी लगती है
डाकिया बाबू...!!

पिता की तरह

सूखी डाली पर संघर्षरत..
एक अदद हरा पत्ता..
उम्मीद बंधाता है..
देता है सन्देश..
जीवन अभी मरा नहीं है!...
सूखी डाली पर
लटका हुआ एक
अदद हरा पत्ता..
करता है संघर्ष..
करता है पूरा प्रयत्न ..
कि वो रहे न रहे..
उसका ये पौधा, ये पेड़
होता रहे पोषित..
और एक दिन
वापस लहलहा उठे!..
पत्ते जानते है ..
उनका कर्तव्य है..
पोषण करना..
बनाना भोजन अपने पूरे..
परिवार के लिये..
और जब नहीं मिल पाती
उन्हें सामग्री
बनाने के लिये ख़ुराक..
वो झोंक देते हैं अपना सर्वस्व..
अपनी शिराओं में बहने वाले
तत्व से करने लगते हैं
परिवार के
पेट की पूर्ति...
और एक दिन सूख कर
टूट जाते हैं..
पत्ते झरते नहीं है..
पत्ते देते हैं बलिदान!!..
पत्ते होते हैं ..हूबहू..
माँ की तरह..
और जड़ संघर्षरत
पिता की तरह!!..

हिंदी माँ

मैंने अपनाया है
मेरे आँचल में ..
शरण लेने वाली हर संतान को!...
मैंने नहीं किया कभी कोई
प्रयास बलपूर्वक
बदलने के लिये ..
उनकी भाषा ,उनका परिवेश!..
मैनें उनके पालन
और पोषण के लिये

स्वयं तक में कर लिये..
संभव परिवर्तनताकि..
समझ सकूँ मैं उनकी
अभिलाषा!..उनकी आवश्यकता..
मैंने बाँटा है मेरे आँचल का
टुकड़ा टुकड़ा..
मेरे दूध की बूंद बूंद!..
मैंने निःसंकोच दिया है आश्रय
परदेश से आई ..
यमन, फ़ारसी, अरबी, तुर्क
और आंग्ल संतानों को...
मैं सबसे विशाल उदाहरण हूँ
मातृत्व के भाव का...

मेरी मातृभूमि की ही तरह ही...
मैंने नहीं किया कभी भेदभाव
मेरे गर्भ पुत्रों और
मेरे शरण आए पुत्रों में..
किन्तु आज मैं हताश हूँ
जब देखती हूँ
अपना प्रतिबिम्ब..
बाँट कर टुकड़े टुकड़े आँचल..
मैं कहाँ हूँ अब
दिखाई ही नहीं दे रही हूँ
पहचान भी नहीं पा रही हूँ
स्वयं को..
पाती हूँ क्षत विक्षत!..
मैं माँ जो ठहरीआज भी नहीं ..
माँगूँगी कुछ अपनी संतानों से...
माँ मांगती भी कब है!!..
शायद इन्हें हो
आभास मेरी इस वृद्धावस्था का!..
क्या ये संताने देगी
मुझे मेरा पूर्ववत स्वरूप..
या कम से कम रखेंगी जीवित भी,.
इस 3500 वर्ष बूढ़ी अपनी हिंदी
माँ को!!...

स्वतन्त्र चिरैया

आओ कि हटा दूँ ,
ये आवरण जो
तुमने ओढ़ रखें हैं..
नाम पर
नक़ाब के,
हिज़ाब के,
घूंघट के,
मर्यादा के,
अभिव्यक्ति पर
दबाव के!..
मैने देखा है हमेशा
एक पर्दा,
एक नक़ाब,
एक घूंघट,
एक मर्यादा ,
तुम्हारी आँखों में ....
शर्म के,
लाज के,
हया के रूप में!...

वही है सच्चा आवरण,
असली पर्दा
जो होता है आंखों में
स्त्री की ही नहीं
मर्द की भी...
आओ की खिला दूँ...
तुम्हारे होठों पर
उन्मुक्त हँसी,
अल्हड़ हँसी,
मुस्कुराहट ,
जो पूर्ण खिली,
कह सको तुम
सही को सही
गलत को गलत
आओ कि तुम्हे
बना दूँ मैं ..
उन्मुक्त आकाश की
स्वतन्त्र चिरैया !!...

आख़री पन्ने

जिसमें शामिल होते थे..
बेतरतीबी से,
लापरवाही से,
शरारत से,
दिल की गहराई से...
या चलते चलते यूँ ही
अटकाए हुए कुछ लफ्ज़..!
दबे हुए कुछ हुनर,
जो नुमायाँ होते थे वहाँ..
किसी कार्टून..या पेंसिल स्केच के
ज़रिये..या अलग अलग
फ़ॉन्ट्स में लिखे....
कुछ डिजाइनर नामों से...!
कभी इस अंदाज़ से
अपने नाम के साथ जोड़ कर
लिखा हुआ..कोई नाम..,
जिसे कोई
डिकोड न कर पाए..
सुलझा न पाए..!!
कई सारे अंक..चित्र..लिखावटें
जो बन जाते थे
धीरे धीरे...उन पन्नो पर..
किसी पहेली की तरह..
उलझकर एक दूसरे से..!
आज फिर मन करता है
उन पन्नो को खोलकर..
उन उलझी हुई लिखावटों से
एक एक कहानी
अलग करने का..
ढूंढ कर निकालना चाहता है
कुछ नाम ..कुछ अरमान
जो दबे पड़े हैं ..वहीं कहीं..!

कभी कभी लगता है
ज़िन्दगी वही तो है..
कुछ उलझे हुए..कुछ छुपे हुए..
छुपाए हुए..दबे हुए..
कुछ साफ सजे हुए ..
कई ढंगों की
ये शरारतें..
कई रंगों के ये
बिखरे हुए एहसास..!!

ज़िन्दगी तुम हूबहू हो..
स्कूल की रफ कॉपियों के
आख़री पन्नों की तरह...!!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- हेमन्त बोर्डिया
जन्म	- 28 जून 1976, इन्दौर (म.प्र.)
माता	- श्रीमती द्वारकी बोर्डिया
पिता	- श्री कुंजीलाल बोर्डिया
पत्नी	- श्रीमती दीपाली बोर्डिया
पुत्र	- सार्थक बोर्डिया
शिक्षा	- स्नातक विज्ञान (गणित)
कार्य	- प्रबंधक विपणन
विधा	- तुकांत, अतुकांत, गज़ल
प्रकाशन	- सांझा संकलन 'गूँजन' का प्रकाशन
सम्मान	- अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2017

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-08-6

मूल्य- 55/-